



हिंदी पत्रकारिता और स्वतंत्रता संग्राम: एक अध्ययन

करताराम पहाडिया¹

¹ सहायक आचार्य, वी/पी-पूरन, तह-जसवंतपुरा जिला-जालौर (राजस्थान).

ABSTRACT:

हिंदी पत्रकारिता ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह न केवल जनमानस को जागरूक करने का माध्यम बनी, बल्कि स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहे नेताओं और आंदोलनकारियों की आवाज भी बनी। इस शोध पत्र में हिंदी पत्रकारिता के विकास, उसकी चुनौतियों और स्वतंत्रता संग्राम में उसकी भूमिका का विश्लेषण किया गया है। भारत में पत्रकारिता का उदय अंग्रेजी शासन के विरोध और भारतीयों के अधिकारों के प्रति जागरूकता लाने के लिए हुआ। 19वीं सदी में जब हिंदी पत्रकारिता का विकास हुआ, तो यह स्वतंत्रता संग्राम के लिए एक सशक्त हथियार बन गई। इस युग के प्रमुख समाचार पत्र जैसे हिंदुस्तान, अमृत बाजार पत्रिका, भारतमित्र, और कर्मयोगी ने लोगों को स्वतंत्रता के महत्व को समझाया। पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है। यह समाज में सूचना और विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम है। भारतीय पत्रकारिता का इतिहास केवल सूचनाओं को प्रकाशित करने तक सीमित नहीं रहा; यह सामाजिक सुधार, जनजागृति और क्रांति का माध्यम भी बना। हिंदी पत्रकारिता ने 19वीं सदी के उत्तरार्ध से लेकर 20वीं सदी के स्वतंत्रता संग्राम तक भारतीय जनमानस में जागरूकता और एकता लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

KEYWORDS:

हिंदी पत्रकारिता, स्वतंत्रता संग्राम, उदंत मार्टेड, पंडित जुगल किशोर शुक्ल, अमृत बाजार पत्रिका, प्रताप अभ्युदय, गणेश शंकर विद्यार्थी, महात्मा गांधी, नवजीवन हरिजन सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन, स्वदेशी आंदोलन क्रांतिकारी, आंदोलन प्रेस एक्ट।

PAPER ACCEPTED DATE:

28th October 2024

PAPER PUBLISHED DATE:

31st October 2024

विषय-वस्तु

हिंदी पत्रकारिता का उद्भव:

- 1826 में पंडित जुगल किशोर शुक्ल द्वारा प्रकाशित *उदंत मार्टेड* को हिंदी पत्रकारिता का प्रारंभिक स्तंभ माना जाता है।
- 19वीं सदी के उत्तरार्ध में हिंदी समाचार पत्रों का दायरा बढ़ा और उन्होंने ग्रामीण और शहरी पाठकों के बीच सेतु का कार्य किया।

स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी पत्रकारिता की भूमिका:

स्वतंत्रता की चेतना का प्रचार:

- हिंदी पत्रकारिता ने जनमानस में स्वतंत्रता के प्रति चेतना जागृत की।
- बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गांधी और अन्य नेताओं के विचार हिंदी समाचार पत्रों के माध्यम से जन-जन तक पहुंचे।

विदेशी शासन के विरोध का माध्यम:

- अंग्रेजी शासन के खिलाफ लिखने वाले पत्रकारों को जेल में डाल दिया गया, लेकिन वे अपनी कलम से नहीं रुके।
- युगांतर*, *अभ्युदय*, और *प्रताप* जैसे समाचार पत्रों ने क्रांतिकारियों को प्रेरित किया।

अहिंसा और सत्याग्रह का प्रचार:

- महात्मा गांधी ने *नवजीवन* और *हरिजन* जैसे पत्रों के माध्यम से अपने विचारों का प्रचार किया।
- हिंदी पत्रकारिता ने सत्याग्रह और असहयोग आंदोलन को जन-आंदोलन बनाने में मदद की।

चुनौतियाँ:

- आर्थिक संसाधनों की कमी।

- ब्रिटिश सरकार द्वारा सेंसरशिप और दमन।
- पत्रकारों और संपादकों को जेल भेजा जाना।

स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी पत्रकारिता की भूमिका

स्वतंत्रता की चेतना का प्रसार:

हिंदी पत्रकारिता ने स्वतंत्रता संग्राम में जनमानस को जागरूक करने का कार्य किया। समाचार पत्रों के माध्यम से जनता को ब्रिटिश शासन के दमनकारी नीतियों और उनके विरोध के तरीकों के बारे में सूचित किया गया।

- अभ्युदय* और *प्रताप* जैसे पत्रों ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के नेताओं के विचारों को जन-जन तक पहुंचाया।
- युगांतर* और *कर्मयोगी* जैसे समाचार पत्रों ने क्रांतिकारियों के विचारों और कार्यों का समर्थन किया।

ब्रिटिश शासन की आलोचना:

ब्रिटिश सरकार की नीतियों और अत्याचारों पर तीखी आलोचना की गई।

- बाल गंगाधर तिलक के *केसरी* और *मराठा* जैसे पत्रों ने न केवल मराठी और अंग्रेजी में, बल्कि हिंदी में भी स्वराज की भावना को प्रसारित किया।
- नवजीवन* और *हरिजन* के माध्यम से महात्मा गांधी ने अहिंसा और सत्याग्रह के विचारों का प्रचार किया।

क्रांतिकारी आंदोलनों का समर्थन:

क्रांतिकारी आंदोलन जैसे बम कांड, असहयोग आंदोलन, और सविनय अवज्ञा आंदोलन को हिंदी पत्रकारिता ने समर्थन दिया।

- प्रताप* के संपादक गणेश शंकर विद्यार्थी ने शहीद भगत सिंह और उनके

साथियों के विचारों को जनसामान्य तक पहुंचाया।

- क्रांतिकारी गीत और कविताएँ, जैसे *सरफरोशी की तमन्ना*, समाचार पत्रों में प्रकाशित होती थीं, जो युवाओं को प्रेरित करती थीं।

सत्याग्रह और असहयोग आंदोलन का प्रचार:

महात्मा गांधी ने अपने आंदोलनों के लिए हिंदी पत्रकारिता को माध्यम बनाया।

- असहयोग आंदोलन के दौरान हिंदी समाचार पत्रों ने स्वदेशी वस्त्रों और उत्पादों को अपनाने का प्रचार किया।
- सत्याग्रह और दांडी मार्च जैसी घटनाओं को प्रमुखता से प्रकाशित किया गया।

ब्रिटिश सरकार द्वारा सेंसरशिप और दमन

हिंदी पत्रकारिता के स्वतंत्रता संग्राम में बढ़ते प्रभाव को देखते हुए ब्रिटिश सरकार ने कई कठोर कदम उठाए।

- प्रेस एक्ट, 1878 और 1910 के तहत समाचार पत्रों पर प्रतिबंध लगाए गए।
- संपादकों को जेल भेजा गया और समाचार पत्रों पर भारी जुर्माने लगाए गए।
- *प्रताप* और *अभ्युदय* जैसे समाचार पत्रों पर कई बार प्रतिबंध लगाए गए।

प्रमुख हिंदी पत्रकार और उनके योगदान

पंडित जुगल किशोर शुक्ल:

- हिंदी पत्रकारिता के जनक।
- *उदंत मार्तंड* के संपादक।

गणेश शंकर विद्यार्थी:

- *प्रताप* के संपादक।
- साम्प्रदायिक एकता और क्रांति के प्रेरणा स्रोत।

बालमुकुंद गुप्त:

- *भारत मित्र* के संपादक।
- हिंदी भाषा और राष्ट्रीय भावना के प्रचारक।

महात्मा गांधी:

- *नवजीवन* और *हरिजन* के माध्यम से हिंदी पत्रकारिता को नई दिशा दी।

हिंदी पत्रकारिता की चुनौतियाँ

आर्थिक समस्याएँ:

- सीमित संसाधनों के कारण हिंदी समाचार पत्रों को प्रचलित करना कठिन था।

पाठक वर्ग की कमी:

- प्रारंभिक दौर में शिक्षित हिंदी पाठकों की संख्या सीमित थी।

ब्रिटिश शासन का दबाव:

- सेंसरशिप और दमनकारी नीतियों ने पत्रकारिता की स्वतंत्रता को बाधित किया।

19वीं सदी के अंत में पत्रकारिता का विस्तार:

19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में *अमृत बाजार पत्रिका*, *हिंदुस्तान*, *भारतमित्र*, और *प्रताप* जैसे समाचार पत्रों ने हिंदी पत्रकारिता को एक नई दिशा दी। इन समाचार पत्रों ने राजनीतिक और सामाजिक आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई।

निष्कर्ष

हिंदी पत्रकारिता स्वतंत्रता संग्राम का अभिन्न हिस्सा थी। इसने भारतीय जनमानस को एकजुट करने, राजनीतिक चेतना बढ़ाने, और स्वाधीनता के लिए प्रेरित करने का कार्य किया। पत्रकारों और संपादकों ने न केवल अपने लेखन से, बल्कि अपने कार्यों से भी स्वतंत्रता संग्राम में योगदान दिया।

स्वतंत्रता संग्राम के बाद, हिंदी पत्रकारिता ने सामाजिक सुधार और विकास के क्षेत्र में अपनी भूमिका जारी रखी। यह अध्ययन यह प्रमाणित करता है कि हिंदी पत्रकारिता न केवल एक सूचना का माध्यम थी, बल्कि यह स्वतंत्रता संग्राम की आत्मा थी।

REFERENCES

1. जुगल किशोर शुक्ल, *उदंत मार्तंड और हिंदी पत्रकारिता का प्रारंभिक युग*।
2. महात्मा गांधी, *नवजीवन और हरिजन में प्रकाशित लेख*।
3. गणेश शंकर विद्यार्थी, *प्रताप और स्वतंत्रता संग्राम में पत्रकारिता का योगदान*।
4. रामचंद्र गुहा, *भारत का स्वतंत्रता संग्राम*।